Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
OnlineISSN2348-3083,SJIMPACTFACTOR2021:7.27
https://www.srjis.com/issues_data/223
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL OCT-NOV 2023, Vol-11/60

जनपद गोरखपुर में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप

Durgesh Chand Gaur

Research scholar

Paper Received On: 25 October 2023

Peer Reviewed On:30 November 2023

Published On: 01 December 2023

किसी भी राष्ट्र या क्षेत्र की कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न व्यवसाय अथवा कार्यों में संलग्नता की स्थिति को व्यावसायिक संरचना कहा जाता है। इसे ही किसी निश्चित कार्य के अन्तर्गत जुड़ी हुई सक्रिय जनसंख्या के रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विशेष महत्व है क्योंकि इसमें जनसंख्या के जीविकोपार्जन की दशाए प्रकट होती है। क्षेत्र के विकास स्तर का बोध होता है। अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है। स्वाभाविक है कि व्यावसायिक संरचना में कृषि सम्बन्धी कार्यो की प्रधानता है। व्यावसायिक संरचना की विवेचना के पूर्व जनसंख्या की कार्यशीलता अथवा काम करने वाली जनसंख्या का परिचय आवश्यक है क्योंकि किसी क्षेत्र की आर्थिक संरचना की सुदृढ़ता वहां की जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के अनुपात पर निर्भर होता हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानव शक्ति आधारभूत एवं महत्वपूर्ण संसाधन है। सामान्यतः देश के जिन भागों में कार्यरत मानव संसाधन की अधिकता है उन्ही क्षेत्रों की आर्थिक संरचना सुदृढ़ है।

व्यावसायिक कार्यों का विभाजन वस्तुतः मानव सभ्यता के विकास क्रम के अनुसार हुआ है। प्रारम्भिक रूप में मनुष्य कृषि से सीधे सम्पर्क में था और जो भी संसाधन उपलब्ध थे उसने उसी पर आधारित होकर अपना जीवन यापन प्रारम्भ किया। इस संन्दर्भ में प्रकृति नियन्त्रित मानव भोजन एकत्रीकरण एवं आखेट को व्यावसाय के रूप में अपनाया। कालान्तर में जनसंख्या वृद्धि एवं तक्नीकी क्षमता के विकास के साथ–साथ मनुष्य ने पशुओं और पौधौं का धरेलूकरण किया। वहीं से पशुपालन एवं कृषि का विकास हुआ। धीरे–धीरे कृषि में भी व्यापारिक फसलों का अविष्यकार हुआ। पुनः जनसंख्या वृद्धि एवं विभिन्न आवश्यकताओं के कारण मनुष्य कृषिगत पदार्थों और खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योग धन्धों की ओर अग्रसर हुआ। इस प्रकार से प्राथमिक कार्यो से द्वितीयक कार्यो के सुचारू संचालन हेतु व्यापार और सेवा सम्बन्धी कार्यो का विकास हुआ। इस प्रकार मानव सभ्यता प्राथमिक अर्थतन्त्र से निकलकर द्वितीयक होते हुए वर्तमान समय में तृतीयक स्तर तक आ पहुंची है।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

किसी भी क्षेत्र की कार्यात्मक संरचना क्षेत्र विशेष के संरचनात्मक संगठन को प्रदर्शित करती है। इसके माध्यम से किसी क्षेत्र में विद्यमान अर्थव्यवस्था एवं उसके आगामी विकास क्षमता का सहजरूप में आंकलन एवं विश्लेषण किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या को व्यावसाय के आधार पर मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया गया है।

1– कृषक।

2– कृषक श्रमिक।

3– पारिवारिक श्रमिक।

4– अन्य कार्यों में संलग्न जनसंख्या।

कार्यरत जनसंख्या से तात्पर्य ऐसे लागों से है जो शारीरिक या मानसिक रूप से किसी न किसी आर्थिक कार्य में संलग्न है जिससे इनके आश्रितों का भरण पोषण होता है।

धनात्मक उत्पाद सीमान्त वाली जनसंख्या को कम करने वालों की श्रेणी में रखा जाता है जिसका अधिकतम अंश मजदूरों का होता है।

शोध प्रपत्र का उद्देश्य –

1– प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान अर्थव्यस्था एवं उसके आगामी विकास क्षमता का आकलन एवं विश्लेषण करना है।

2– व्यावसायिक संरचना के माध्यम से क्षेत्र विशेष में निवासित समाज की जीवन पद्वति एवं जीवन यापन के स्तर को ज्ञात करना।

आकड़ों का स्रोत एवं विधितन्त्र–

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया गया है इसके लिए महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र गोरखपुर एवं प्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र गोरखपुर (2020–21) तथा सांख्यिकी पत्रिका जिला स्पाइडर रिपोर्ट (2020–21) का विस्तृत अध्ययन किया गया है यथा स्थान आंकड़ों का अंकन विश्लेषण एवं मानचित्रण भी किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र–

शोध प्रपत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तर–प्रदेश राज्य के राप्ती व रोहिन नदियों के संगम पर बसा पूर्वी उत्तर–प्रदेश का प्रमुख जनपद है जिसका विस्तार $26^0$13′ से 27^0 06′उत्तरी अक्षांश तथा 83^0 05′से $83^0$40′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है जो सागर तल से 85 मी0 की ऊंचाई पर स्थित है गोरखपुर जनपद

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

का क्षेत्रफल 3321 वर्ग किमी0 है। जनपद के उत्तर में महराजगंज जिला, पूरब में कुशीनगर

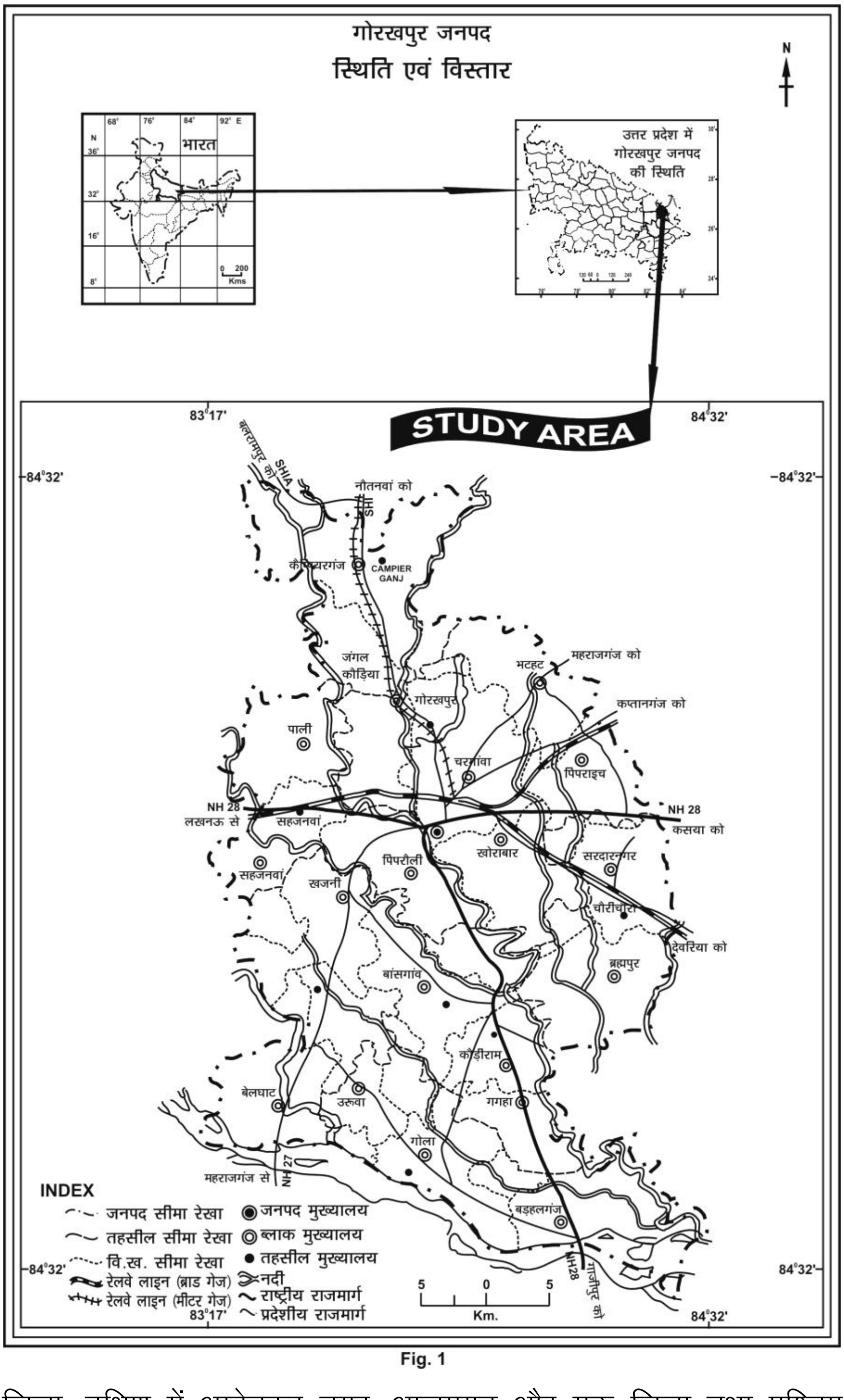

Fig. 1

एवं देवरिया जिला, दक्षिण में अम्बेडकर नगर, आजमगढ़ और मऊ जिला तथा पश्चिम में सन्तकबीर नगर जिला है। गोरखपुर जनपद गोरखपुर मण्डल का भाग है। जनपद गोरखपुर में कुल 7 तहसील, 19 विकासखण्ड, 191 न्यायपंचायत, 1354 ग्राम सभा एवं कुल गॉव 3448 है। जनपद में राप्ती एवं रोहिन के अतिरिक्त धाधरा, आमी, कुआनों तथा गोर्रा नदियों का अपवाह पाया जाता है।

तलिका–1

गोरखपुर जनपद की व्यावसायिक संरचना(2011)

कार्य वर्ग	व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप	प्रतिशत में
कृषक	174804	23.90
कृषि श्रमिक	163544	21.91
परिवारिक श्रमिक	43134	5.78
अन्य कार्य	364899	48.89
औसत/योग	**746321**	**25**

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका, गोरखपुर /(2011)

आलेख–1

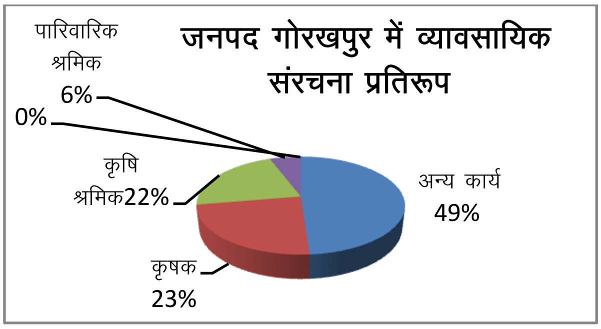

कार्यशील जनसंख्या–

अध्ययन क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या के जीविकोपार्जन के साधन में कृषि कार्य एवं द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र का सम्मिलित प्रभाव है। गोरखपुर की अपनी विशिष्ट प्राकृतिक एवं भौगोलिक स्थिति तथा ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने के कारण कृषि कार्यो की अधिकता पायी जाती है। यहॉ की जनसंख्या की क्रियाशीलता काफी कम है। लगभग कुल जनसंख्या का 16.8 प्रतिशत भाग ही क्रियाशील जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है।

तालिका 1 एवं आलेख 1 से स्पष्ट होता है कि गोरखपुर की कुल कार्यशील जनसंख्या का 44. 81 प्रतिशत भाग कृषि कार्यो में संलग्न है जिसमें 23.90 प्रतिशत कृषक एवं 21.91 प्रतिशत कृषक मजदूर है। शेष 54.67 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यो में संलग्न है। व्यावसायिक दृष्टि से जनपद की जनसंख्या को चार वर्गों में विभाजित किया गया है।

कृषक – कृषक वह व्यक्ति होता है जो अपनी स्वयं की भूमि या किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था से बटाई या किराये पर लिया गयी भूमि या अन्य प्रकार से प्राप्त भूमि पर स्वयं खेती करता है या अपने निर्देशन या देख–रेख में उस जमीन पर कृषि करवाता है। इसमें वे व्यक्ति भी कृषक माने जाते है जो पारिवरिक सदस्य के रूप में कृषि करते है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या कृषि कार्यो में ही संलग्न है जिसमें कृषक 23.90 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कृषक कैम्पियरगंज विकास खण्ड

में 74.77 प्रतिशत पाये जाते है जबकि सबसे कम कृषक चरगांवा विकास खण्ड में 47.47 प्रतिशत पाये जाते है।

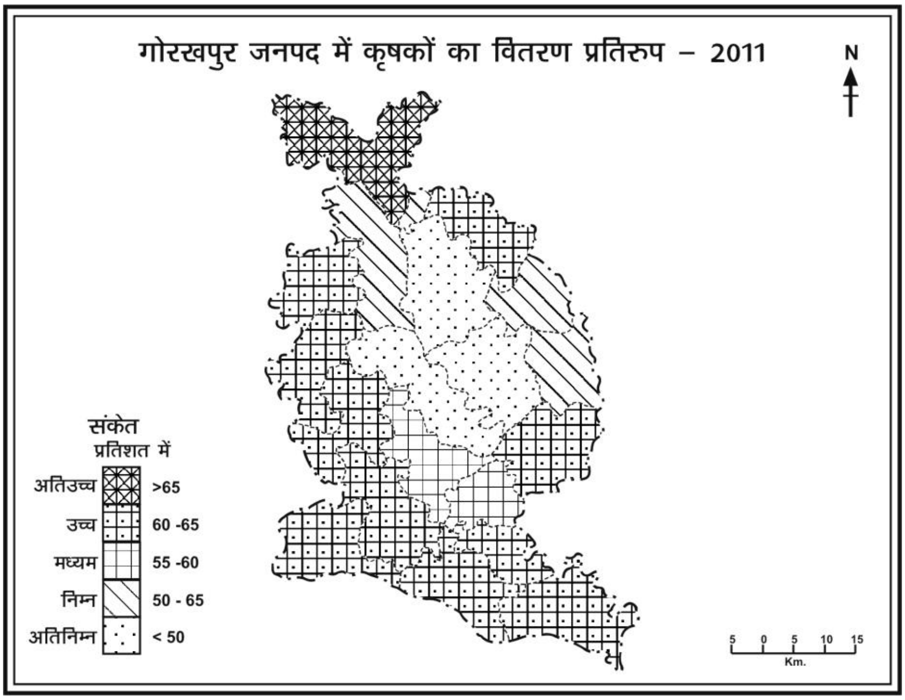

तलिका –2

जनपद गोरखपुर में कृषकों का वितरण प्रतिरूप (प्रतिशत में) 2011

क्र0 सं0	श्रेणी	कृषक मजदूरों का वितरण (प्रतिशत में)	विकास खण्डों की संख्या	प्रतिशत
1–	अति उच्च	65 से अधिक	1	5.3
2–	उच्च	60–65	10	52.7
3–	मध्यम	55–60	2	10.6
4–	निम्न	50–55	3	15.7
5–	अति निम्न	50 से कम	3	15.7

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद गोरखपुर के अधार पर शोधार्थी द्वारा परिगणित।

कृषक मजदूरों की क्षेत्रीय स्थिति स्पष्ट करने के लिए इन्हें निम्न तीन श्रेणियों में बांटा गया है।

I –अति उच्च श्रेणी– इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र में उन विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है जिसमें कृषक श्रमिको का प्रतिशत 65 से अधिक पाये जाते है। अध्ययन क्षेत्र में 5.3 प्रतिशत भाग पर अति उच्च श्रेणी के कृषक पाये जाते है जिसके अन्तर्गत कैम्पियरगंज विकासखण्ड को सम्मिलित किया गया है।

II –उच्च श्रेणी– इस श्रेणी के अन्तर्गत उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है जहॉ 60 से 65% कृषक पाये जाते है इसके अन्तर्गत कुल 10 विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है जिसमें सबसे

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कम पाली जनपद में 60.60% तथा सर्वाधिक बड़हलगंज में 63.86% कृषक पाये जाते है। इसके अतिरिक्त सहजनवां 60.82%, भटहट 62.14%, ब्रहमपुर 62.08%, उरूवा 60.81%, गोला 60.62%, बेलधाट 61.65%, खजनी 60.62%, गगहां में 63.27% आदि विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है जो कि समस्त जनपद के 52.7% कृषकों का प्रतिनिधित्व करता है।

III– मध्यम श्रेणी –इस श्रेणी के अन्तर्गत उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है जहॉ कृषक 55 से 60% के बीच पाये जाते है। इसके अन्तर्गत कौड़ीराम 57.16% तथा बांसगांव 59.36%, विकास खण्ड को सम्मिलित किया गया है जो अध्ययन क्षेत्र के 10.6% कृषकों का प्रतिनिधित्व करता है।

IV–निम्न श्रेणी– इस श्रेणी के अन्तर्गत उन जनपदों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें कृषको का प्रतिशत 50 से 55 के बीच पाया जाता है। इसके अन्तर्गत कुल 3 विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है– जंगल कौड़िया 52.33% पिपराइच 52.60% एवं सरदारनगर 53.21% को सम्मिलित किया गया है जो अध्ययन क्षेत्र के कुल कृषि जनसंख्या के 15.7% भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

V –अति निम्न श्रेणी– इसके अन्तर्गत उन विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है जहॉ कृषक 50% से कम पाये जाते है इसके अन्तर्गत कुल 3 विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है जो इस प्रकार है। चरगांवा 47.74 %, पिपरौली 48.27% एवं खोराबार 49.50% है जो अध्ययन क्षेत्र के कुल कृ षक का 15.7% भाग सम्मिलित किया गया है।

2–कृषि मजदूर– इसके अन्तर्गत जनसंख्या के उस भाग को सम्मिलित किया गया है जो नकद अनाज या कुछ अन्य वस्तुओं के रूप में मजदूरी या बटाई लेकर दूसरे व्यक्ति के खेतों में काम करता है कृषि मजदूर कहलाता हैं अध्ययन क्षेत्र में 21.91% कृषि मजदूर है। सबसे अधिक कृषक मजदूर भटहट में 33. 11% तथा सबसे कम कृषक मजदूर पिपरौली विकास खण्ड में 22.35% पाये गये है।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

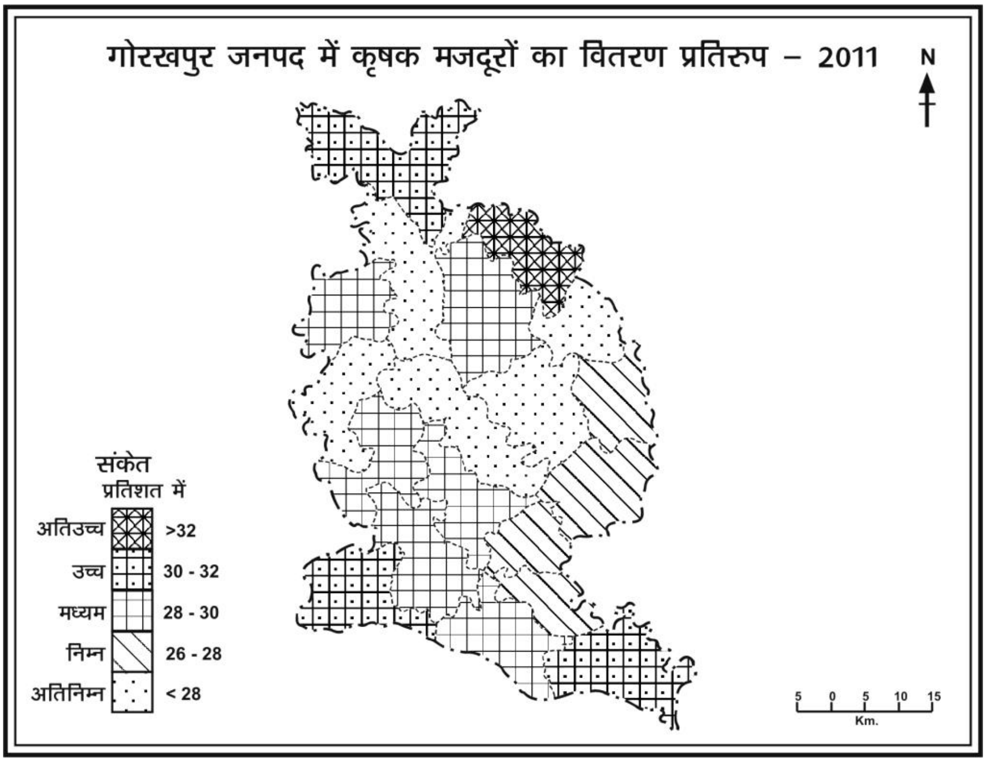

तालिका –3

जनपद गोरखपुर में कृषक मजदूरों का वितरण(2011)

क्र0सं0	श्रेणी	कृषक मजदूरो का %	विकास खण्डों की संख्या
1	अति उच्च	32 सें अधिक	1
2	उच्च	30–32	3
3	मध्यम	28–30	6
4	निम्न	26–28	5
5	अति निम्न	26 से कम	5

जिला सांख्यिकीय पत्रिका गोरखपुर 2011 से प्राप्त आकड़ों के आधार पर शोधार्थी द्वारा परिगणित

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि अति उच्च श्रेणी 32 से अधिक में केवल एक विकास खण्ड ही सम्मिलित हुआ है– भटहट 33.11% जबकि उच्च श्रेणी में 30–32% के बीच कुल तीन विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है– बड़हलगंज 30.59%, बेलधाट 31.55%, एवं कैम्पियरगंज 31.77% है। इसी प्रकार मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत 28 से 30% के बीच कुल छः विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है जो इस प्रकार है – पाली 28.10%, बांसगांव 28.27%, उरूवा 29.35%, खजनी 29.42%, गोला 29.51%, चरगांवा 29.88%। निम्न श्रेणी के अन्तर्गत 26 से 28 के बीच के कृषक मजदूरों के विकासखण्ड को सम्मिलित किया गया है। जो मुख्य रूप से चार है–ब्रहमपुर 26.08%, कौड़ीराम 26.30%, सरदारनगर 27.68%, एवं गगहॉ 27.78%। अति निम्न श्रेणी के अन्तर्गत 26% सें कम कृषक मजदूरों को सम्मिलित किया गया है। इसमें अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कुल पांच विकासखण्ड आते हैं जो इस प्रकार

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

है–पिपरौली 22.35%, पिपराइच 22.45%, खोराबार 23.50%, सहजनवां 25.24%, जंगलकौड़िया 25.87% ।

3–**पारिवारिक श्रमिक –** इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 5.78% लोग सम्मिलित किये गये है। पारिवारिक श्रमिक के अन्तर्गत अति उच्च से लेकर अति निम्न के अन्तर्गत 7%से अधिक श्रमिक वाले विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी के अन्तर्गत के पांच विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है जिसमें सर्वाधिक पारिवारिक श्रमिक 8.53% बेलधाट विकास खण्ड में पाये गये है जबकि न्यूनतम पारिवारिक श्रमिक के अन्तर्गत कैम्पियरगंज विकास खण्ड 3.11% को सम्मिलित किया गया है।

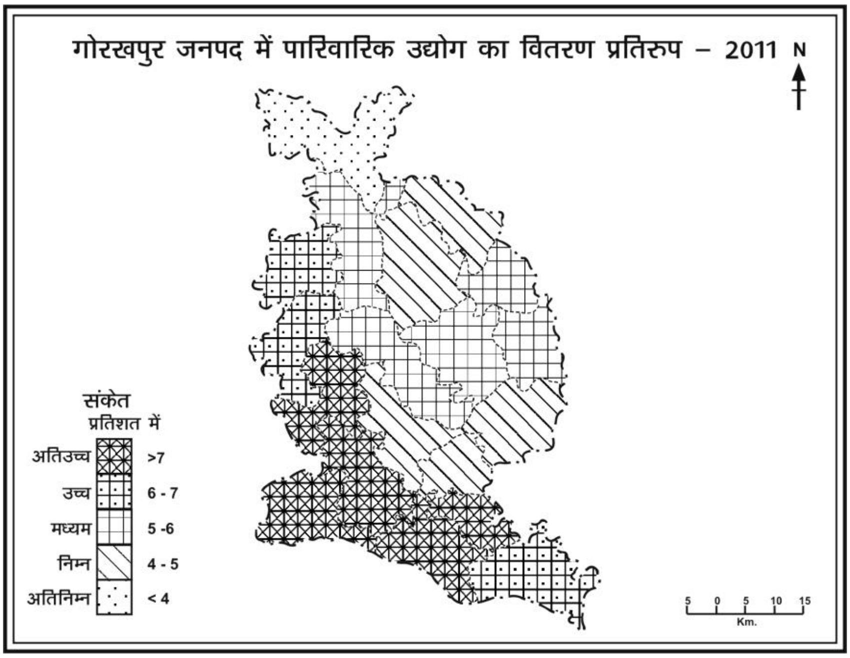

तालिका –4

जनपदगोरखपुर मे पारिवारिक उद्योगो में लगे कर्मकारों का वितरण, (2011)

क्र0 सं0	**श्रेणी**	**परिवारिक उद्योग में लगे श्रमिको का %**	**विकासखण्डों की संख्या**	**प्रतिशत**
1	अति उच्च	7 से अधिक	5	26.31
2	उच्च	6–7	3	15.79
3	मध्यम	5–6	5	26.31
4	निम्न	4–5	5	26.31
5	अति निम्न	4 से कम	1	5.27

स्रोत– पूर्ववत

4–अन्य कर्मकार– इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के कार्यशील जनसंख्या का 48.89% भाग सम्मिलित हैं। इसके अन्तर्गत विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले श्रमिको को सम्मिलित किया गया है।

अन्य कर्मकार श्रमिकों को पांच श्रेणियों में विभाजित किया गया है जिसमें अति उच्च 45 से अधिक इसके अन्तर्गत 3 विकास खण्डों को सम्मिलित किया गया है। सर्वाधिक श्रमिक प्रतिशत चरगांवा विकासखण्ड (47.32%) है साथ ही पिपरौली (46.71%) एवं खोराबार विकास खण्ड (45.01%) है। अति निम्न श्रेणी के अन्तर्गत 30%से कम श्रमिकों को सम्मिलित किया गया है इसके अन्तर्गत 3 विकासखण्ड पाये गये हैं जो निम्न है– कैम्पियरगंज (22.14%), गगहां (29.23%), बेलघाट (29.76%) है।

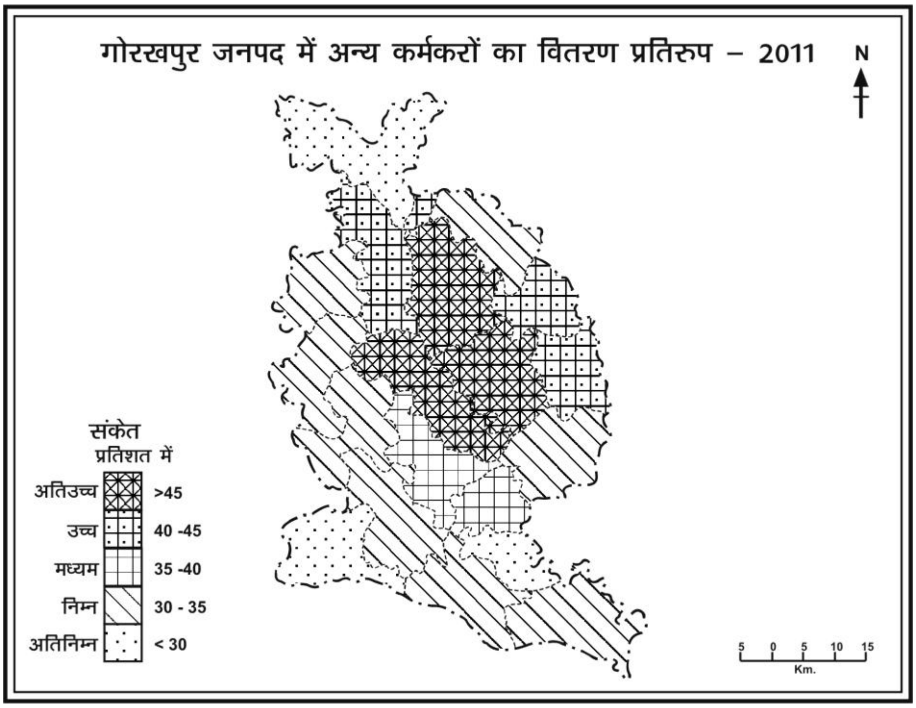

तलिका –5

जनपद गोरखपुर में अन्य कर्मकारों का वितरण प्रतिरूप, 2011

क्र0 सं0	श्रेणी	अन्य श्रमिकों का वितरण % में	विकास खण्डों की संख्या	प्रतिशत
1–	अति उच्च	45 से अधिक	3	15.79
2–	उच्च	40–45	3	15.79
3–	मध्यम	35–40	2	10.53
4–	निम्न	30–35	8	42.10
5–	अति निम्न	30 से कम	3	15.79

स्रोत पूर्ववत

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जनपद गोरखपुर में वर्ष 2011 के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि जनपद में कृषि एवं कृषि श्रमिक के प्रतिशत में कमी आयी है तथा अन्य कार्य में संलग्न व्यक्तियों के प्रतिशत में वृद्धि देखी जा रही है। लेकिन अध्ययन क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या का 44.81% भाग कृषि कार्यों एवं कृषि मजदूर में लगा हुआ है जबकि विनिर्माण व सेवा क्षेत्र मिलकर 48.89% का

प्रतिनिधित्व कर रहे है एवं पारिवारिक श्रमिकों के अन्तर्गत 5.78% भाग सम्मिलित है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य में लगी जनसंख्या सर्वाधिक है जिसका प्रमुख कारण अध्ययन क्षेत्र में वर्षा, वन एवं कृषि युक्त भूमि की अधिकता है जबकि अन्य अवस्थापनात्मक सुविधाओं की अभी भी कमी देखी जा रही है जिसमें वांछित वृद्धि करके कृषि कार्य में लगी जनसंख्या के भविष्यगत व्यावसायिक स्वरूप को और सुदृढ़ किया जा सकता है।

संन्दर्भ सूची

चौहान डा0 पी0 आर0 एवं डा0 महानतम प्रसाद (2010),भारत का वृहद भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर , पृश्ठ 497।
जिला सांखिकी प्रत्रिका जनपद गोरखपुर ,2011
चौधरी विरेन्द्र (अप्रैल 2018) ''उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप''IJCRT,vol,6
यादव हीरालाल, यादव लालबहादुर, ''गोरखपुर नगर उपान्त की जनसंख्या विशेशताए'' उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर vol. 44 no.1
यादव धर्मेन्द्र और जमाल उमरा(जून 2015)''गोरखपुर महानगर में जनसंख्या वृद्वि एवं बुनियादी सुविधाओं का विकास'' गोरखपुर अंक 45, no.1